

आखिरी जिराफ खिड़की

पीटर जिलाही

अंग्रेजी से अनुवाद-उदयन वाजपेयी

यौन परिपक्वता की मेरी उबड़ खाबड़ राह कम्यूनिस्ट तानाशाहों की मौतों से प्रशस्त हुई थी। मुझे पहला यौनानुभव माओ त्सेतुंग की मौत के दिन हुआ। नर्सरी स्कूल में डायना नाम की लड़की ने मुझे मोह लिया था। मेरी आवाज तब फटी जब टीटो मरे और मैं पहली बार तब हुआ जब ब्रिजनेव गये। तीन दिन तक रेडियो पर शास्त्रीय संगीत के अलावा कुछ नहीं हुआ जो मेरे ख्याल से ज्यादाती थी, कुछ स्कूल तक बन्द रहे। फिर कई दिनों तक कुछ नहीं। प्रयोग के तौर पर मैं एक लड़की को फिल्म दिखाने ले गया पर फिल्म कुछ ज्यादा ही अच्छा निकली और मेरे हाथ अकड़ गया। हाईस्कूल में घटना चक्र तेज हो गया। पहले चुम्बन और पहले बदहवास टटोलने के बीच सिर्फ दो महीने लगे। कुछेक हफ्ते और बीते और एनवर की बारी आ गयी लेकिन उस सब में मैं नहीं जाऊँगा। मुझे जी-स्पॉट सबसे पहले तब हासिल हुआ जब चायसेस्कू फाँसी पर चढ़ाये गये। मेरे बढ़ते हुए फलक पर किम द्वितीय सुंग ने नयी रोशनी डाली, सौभाग्य से उन पर लगे आरोप हट गये।

फिदेल '56 में नान्दोरफेहरवार के युद्ध-विजय की पाँचसौवीं जयन्ती के अवसर पर बुदापेस्ट गोलियों से छलनी कर दिया गया। नयी जगहों का इस्तेमाल करते हुए सोवियत सेना '44 की परम्पराओं को दोबारा जीवित कर रही है। शहर छेदों से भर गया है, घर की दीवारों में छेद, घरों के बीच में छेद, नये छेद पुराने छेदों में घुलमिल गये हैं। कोई घर जैसा वो लग रहा है, वह घेराबन्दी के कारण है या क्रान्ति के '44 के या '56 के, बातचीत का स्थायी विषय बन जाता है, यह नयी इमारत है, नहीं तो, यह तो खास बाउहौस शैली की है, तुम्हे वह गोल छज्जा नजर नहीं आ रहा? तब बर्फ गिरी, छेद ढँक गये, फिर और बर्फ गिरी और नयी बर्फ पुरानी में घुलमिल गयी, अब कोई नहीं बता सकता था कि इनमे से कौन-सी बर्फ ने उन छेदों को भरा है, और लोग बर्फ के पिघलने का इन्तजार करने लगे क्योंकि देश अन्तहीन बर्फ से ढँका था। चालीस हजार बड़े और सैकड़ों लाख छोटे छेद। बुदापेस्ट छेदों का शहर है। मैं इसी छेदों के शहर में पैदा हुआ था, अस्पताल की दीवारों पर गोलियों के छेद थे और कब्र के पत्थरों पर भी। मेरी ही आँखों के सामने एक छह फुट लम्बा पनियल साँप फिसलता हुआ नवाब मेनो श्वानबर्गी क्रुचिना (और उनकी पत्नी

मारियान) की कब्र में घुस गया। नवाब '56 में मरे थे, उनकी पत्नी '44 में। वह वर्ग संघर्ष का परिणाम फल था या पियक्कड़ मिस्त्री की करतूत? फिर वह कब्र का पत्थर गायब हो गया, उसकी जगह एक छेद रह गया। फिर छेद की जगह एक नयी कब्र। आप छेदों के आवागमन को देख सकते थे। हम जिस घर में रहे, वह मेरे दादा के मकान से छोटे छेद पर बना था और जब मेरे पिता बच्चे थे, वे बगीचे में बम के बनाये गद्दों में खेला करते थे। बगीचे के पीछे फालतू टी.व्ही. सेट और वेक्यूम ट्यूबों का ढेर लगा था, स्वतन्त्रता के टीले पर सूचनातन्त्र का कबाड़ा। किसी एक छेद में हमें पंखवाला बम मिला था, उसमें भी छेद था। किसी ने उसके सिर के साथ छेड़खानी की थी। हम दीवारों पर चढ़ते थे, छेदों में अपनी अँगुलियाँ फँसाकर बन्द आँखों से गोलियों की कल्पना करते थे। बुदापेस्ट का समकालीन इतिहास ब्रेल लिपि में लिखा है। बुदापेस्ट को आँखों से नहीं, सिर्फ अँगुलियों से देखा जा सकता है, लाईनों के बीच पढ़ा जा सकता है, दीवार जितनी गूढ़ लिपियाँ, महाकाव्य और प्रगीतात्मक संस्करण, युद्धकाल की ग्रफेटी, भद्दे रतिसंकेत, अभिलेखागार उलट-पुलट।

मेरे दादा जब मेरी उम्र के थे, गोवरीलो प्रिंसिप ने गद्दी के सम्भावित वारिस पर गोली चलायी थी। किस्मत ने नाकाम विद्यार्थी और भावी सम्राट को एकसाथ ला दिया। इस मुलाकात से दोनों को अमरता प्राप्त हुई। और मौत। वे एक दूसरे को पहचानते नहीं थे, मुमकिन है उन्होंने एक दूसरे पर एक निगाह भर डाली हो। तुम्हे कैसे मालूम? प्रिंसिप और प्रिंस, प्रिंस और भिखारी, एक बात तय है, दोनों ने गोलियों की आवाज सुनी थी। तब से उद्यानों के भीतर गोवरीलो प्रिंसिप की मूर्तियाँ फ्रेन्ज फर्दीनान्द की मूर्तियों पर गोलियाँ चला रही हैं। गोवरीलो प्रिंसिप गोलियों की फ्रेन्ज फर्दीनान्द वृक्षवीथियों से नाली युद्ध-लीला, स्मारक पट्टियों, संग्रहालयों, तमगों, फिल्मों में तोप युद्धा सरायेवो में उन्होंने राजा की मूर्ति को नीचे उतार लिया। उसकी मौत, जिसने लाखों को मरने का सबब दिया, उसके जीवन की महानतम उपलब्धि थी। पहला विश्वयुद्ध खून की दुश्मनी की तरह शुरू हुआ था, जब मेरे दादा मेरी जितनी उम्र के थे, उनकी किस्मत किसी और की किस्मत से टकरा गयी। दोनों लोगों को इम्पेरियल और रॉयल सेना में कार्यकर्ता की तरह काम करने बुला लिया गया, दोनों दक्षिणी सीमान्त पर भेज दिये गये और रूसी आक्रमण के दौरान गेलिसिया। दोनों ने अपना काम बखूबी किया। जोसिप ब्राँज और उनकी टुकड़ी ने अस्सी सदस्यों की ताकतवर रूसी टुकड़ी को कैद कर लिया जबकि एक अचानक हमले में मेरे दादा को बम

के इक्कीस टुकड़े और ढेर सारे तमगे लगे। जब वे उनका पैर काटना चाहते थे, उन्होंने सर्जन पर बन्दूक निकाल ली और उसे ऑपरेशन थियेटर से बाहर निकल जाने का हुकम दिया। सालभर के अन्दर दोनों ही कैद में डाल दिये गये और प्रत्यक्ष मुकाबले में दोनों ने ही होश गवां दिये। वे अस्पताल और अपने तपते शरीरों में जागे, दोनों के ही सिरों में उनके शुरूआती जखम चक्कर काटने लगे। मेरे दादा सोचते कि वे उनका पाँव काटना चाहते हैं जबकि जो.ब्राँ. अपने बिस्तर के ऊपर लटकते सन्त पर अपने कपड़े चुराने की कोशिश का आरोप लगाया करते। पलायन के ढेरों विफल प्रयासों के बाद क्रान्ति ने उन्हें रूस में जा पकड़ा। जोसेफ ब्राज को बोल्शेविकों ने धर पकड़ा और उन्हें अन्तरराष्ट्रीय बिग्रेड में भरती कर लिया। अपनी रूसी बीवी की बगल में लेटे हुए उन्हें अचानक ऐतिहासिक अपरिहार्यता का बोध प्राप्त हुआ। मुझे यह सोचने तक से परहेज है कि मेरे दादा बोल्शेविकों के हथ्ये चढ़ गये होते तो उनका क्या हश्र हुआ होता। शताब्दी खत्म होने के पहले, उस शताब्दी के जहाँ सब कुछ अपने सिर के बल खड़ा था, अस्पताल में, जहाँ उनके जीवन समाप्त हुए, टीटो का पाँव काटा गया और किसी ने मेरे दादा के कपड़े चुरा लिये।

मेरी रूसी शिक्षक कहती है कि 'युद्ध और शान्ति' को मूल भाषा में पढ़े बगैर मैं स्लाविक संस्कृति को समझ नहीं सकता। उन्होंने उसे ट्रान्ससाईबेरियन एक्सप्रेस से आते-जाते पढ़ा था। इसकी जगह मैं 'अपराध और दण्ड' पढ़ूँगा ताकि केवल मास्को जाने से मेरा काम चल जाये। वहाँ जाते हुए शायद यही पर्याप्त हो कि मैं अपराध वाले हिस्से को पूरा कर लूँ, फिर लौटते वक्त एरोप्लोट का जहाज ले लूँ (एक और खूबसूरत लब्ज जैसे कोलोन जो जहरीली गैस का पुनर्संस्करण है!), भाषा दिखावे का हिस्सा थी। हम दिखावा करते थे कि हमें रूसी आती है। नू 5 5 । पैतालीस मिनटों तक मैं रूसी सुनता रहा, रूसी में सिर हिलाता रहा, रूसी में कराहता रहा, यहाँ तक कि 'युद्ध और शान्ति' को पास की बेंच पर रखे रहा।

मुझे पता नहीं था कि एक और भाषा जानना सचमुच फायदेमन्द होता है। ज्ञान के विकास के लिए यह पूर्वापेक्षित है, यह अपने आप में भी कुछ है। अगर आप विकसित होना चाहते तो आप अपना होमवर्क ठीक से करते। स्वाभाविक है कि हमने रूसी इसलिए सीखी क्योंकि रूसी एक खूबसूरत भाषा है - यह नहीं कि हंगारी कुछ कम है। उन दिनों केवल रूसी शिक्षिकाएँ ही रूसी बोलती हैं - ऐसी औरतें जो पचास के ऊपर की होती और अपने बाल रंगे

रहती, कबिलाई अनुष्ठानों से लैस, आक्रमक, प्रजातीय अल्पसंख्यक, जिनकी खब्त रोल कॉल थी। यह उत्तरजीविता का प्रश्न था, हर मंजिल को पाने से पहले सिरों की गिनती करना। मैंने युद्ध की फिल्मों के बाहर कभी किसी रूसी सिपाही को नहीं देखा और वे भी हंगारी भाषा में डब्ड थी। मैंने पहली मर्तबा हाड़-मांस के रूसी सैनिक को तब देखा जब वे हंगरी को छोड़कर वापस जा रहे थे। शीत-युद्ध खत्म हो रहा था और लगता था कि शक्ति भी। चूंकि अब किसी चीज के लिए जान की बाजी लगाने की जरूरत नहीं बची थी, रूसी सैनिक अपने हथियार थोड़े से पैसों में बेचने लगे थे। मेरा दोस्त पैराशूट खरीदना चाहता था। मैं उसका दुभाषिया था।

‘पैराशूट जेस्टी,’ क्या उनके पास पैराशूट हैं, लेकिन मैं हड़बड़ा गया और आखिरी अक्षर ‘टी’ को छोड़ गया। खुदा का शुक्र है रूसी भाषा के ‘इस’ और अमरीकी ‘यस’ का उच्चारण एक सा है। उसका अध्ययन करना काम का साबित हुआ। अमरीकी गो होम, या ‘पॉशली डेमोय’ एक सा था, कब्जा नक्शे पर महज एक रेखा था महज एक लहजा, एक समुच्चयबोधक कारक। न टैंक, न आठवाँ दर्जा, न मीशा भालू, मेरे रिपोर्ट कार्ड पर सिर्फ दस्तखत थे। कारपोरल ने हंगारी में जवाब दिया, दो वोद्का, वो बोला और उसने दो अँगुलियाँ दिखायीं, क्योंकि वहाँ वे दो थे। उसने पूछा, मेरा स्कूल कैसा चल रहा है। मुझे उसकी आत्मीयता से चिढ़ हुई और मैं बुदबुदाया - नू 5 5, नू 5 5, ठीक वैसे जैसे मैंने ‘द सायलेण्ट डॉन’ में देखा था, वह बोला, उसके एक बेटा है, सर्गेई और उसे पता है कि हमारे लिए चीजें आसान नहीं हैं और हमारी कालाशिनेव के बारे में क्या राय है। या इस पिस्तौल के बारे में हमारे क्या खयाल हैं? मानो बिली बण्टर को मिठाई की दुकान में छुट्टा छोड़ दिया गया हो। वो गोलियों के डिब्बे को तोहफे में दे देगा, और चलो पुराने भले दिनों की याद में पियें, पुराने भले दिन वे थे जब मैं था ही नहीं और हमारे पिता खुशी खुशी एक दूसरे को मार रहे थे - मैं उसकी खातिर पियूँगा, एक शत्रु सैनिक के साथ जो मुझसे मेरी भाषा में बात कर रहा है। ‘एजे सेजेद्रे,’ एन.सी.ओ. बोला, उसका ‘नाज दरोव्ये’ मील भर बाहर निकला था। ‘एजेजजेद्रे’ ‘एजे सेजेद्रे’; तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए, तुम्हारी गुदा के लिए, काफी करीब के हैं। सर्गेई को सर्गी भी कह सकते हैं, जैसे उसका बेटा, लेकिन हम उसे सेर्योशा कहेंगे। वह मुझे बोटल पकड़ाता है और पैतोफी को बिल्कुल ठीक ठीक उद्धृत करता है। हंगरी एक कविता है, वह कहता है। मैं उसे बताता हूँ कि हंगरी के एक वैज्ञानिक दल ने बर्गुजिन कब्र में शेण्डोर

पैतोफी के कंकाल की पहचान की थी लेकिन बाद में वह कंकाल एक औरत का निकला। वह बोलता है, उसे इस पर अचरज नहीं है। रूस एक विशाल देश है। लेकिन वह आक्रमक नहीं, बल्कि वह दूसरों को खुश करना चाहता है। वह घर नहीं जाना चाहता, वह बोला, उसे यहां अच्छा लगता है, उसे हंगारी लोग पसन्द है, खासकर औरतें। और वह मुझे आँख मारता है जैसे मुझे यह पता होना चाहिये कि वह क्या बक रहा है। मैं उसे पावलोवीय आँख मार कर जवाब देता हूँ क्योंकि मुझे पता है कि आपको औरतो के बारे में बात करते वक्त यही कुछ करना होता है। हमें उसे और तंग करने की जरूरत नहीं लेकिन वह हमसे रूकने का आग्रह करता है, बेशक हंगारी में। मुझे सावधानी बरतनी चाहिए, शायद वह रूसी भाषा बोलता ही नहीं है। एक ओबी-यूग्रिक डबल एजेण्ट। हम हाथ हिलाते हुए लौटते हैं। जब हम दरवाजे तक पहुँचे उसने हमें बुलाया, कुछ मुफ्त हथगोलों के बारे में क्या ख्याल है?

शुरू में अव्यवस्था थी लेकिन हमने उसे पढ़ लिया और हम सब समझ गये क्योंकि हमें पंक्तियों के बीच पढ़ना आता था। और अब हम पर दबाव कि यह समझें कि उस 'सब' से क्या आशय था जो कुछ ही दिन पहले स्पष्ट था। साठ के दशक में दबे हुए क्रान्तिकारी आवेग से कादर उठ खड़ा हुआ और सत्रह की शुरूआत में हमारे माता-पिता तेजी से बढ़ने लगे। मैं किसी किशोर को यह कैसे समझाता कि जिस बेहतर भविष्य के गीत हम गाते रहे, वह आ पहुँचा है, क्योंकि बेहतर भविष्य हमेशा आता है, मैं यह कैसे समझाता कि वह समझ नहीं रहा है? मुझे अपने माता पिता की ही तरह लगता था जो यह मानते थे कि ऐसा हमेशा रहेगा। प्रिय माँ और पिता यही वो देश है जहाँ तुम आना चाहते थे। किसी भाषा की कक्षा में जाना जरूरी नहीं। मैं यह कैसे बताता कि व्यवस्था का बदलाव क्रमिक विकास है और यह कि पुराना राज बाद में पार्टी में खो गया, कि हमारा किशोर विद्रोह साम्यवाद को बहा ले गया था, कि नये उदार लोकतन्त्र ने पुरानी उदार तानाशाही को ढँक लिया था, एक वक्त जिसने हमें बच्चा समझा था और हमें बढ़ने से रोका था, अचानक डह कर हवा में विलीन हो गया था। और मैंने बढ़ना बन्द कर दिया था। मेरी पीढ़ी को कुछ बन जाना चाहिए था, वह नहीं बनी और हम वैसे ही रहे आये जैसे वे हमेशा से हमें चाहते थे। हमारे सिरों के ऊपर हमारे माता-पिताओं का मतैक्य, एक क्रान्तिकारी संवेग का मौन उन्माद। '56 के सबब से हंगरी में हमें '56 या '89 हासिल नहीं

हुआ। इसकी जगह हमारे माता-पिताओं को बच्चे हुए, और उन्होंने उन्हें पाल-पोसकर जीवित बनाये रखा और अब हम जीवित बने रहेंगे।